दैनिक भास्कर
छतरपुर भास्कर 06-11-2025

सतत विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण जरूरी : डॉ. पुष्पा

स्वस्थ दृष्टिकोण पर्यावरण, पशुओं एवं मानव में अंतर्संबंध विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

भास्कर संवाददाता | बकस्वाहा

शासकीय महाविद्यालय में एक स्वस्थ दृष्टिकोण पर्यावरण, पशुओं एवं मानव में अंतर्संबंध विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में देशभर के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने भाग लेकर पर्यावरण, पशु और मानव जीवन के आपसी संबंधों पर विचार साझा किए।

मुख्य वक्ता अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डॉ. पियूष बबेले, प्रबंधक (जैव प्रक्रिया), हिंदुस्तान पेट्रोलियम निगम लिमिटेड बेंगलुरु ने बताया कि काई और धान के पुआल से तीसरी व चौथी पीढ़ी का एथेनॉल तैयार किया जा सकता है। इससे किसानों की आय बढ़ाने के साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा। डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सह-प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र विभाग, महिला विश्वविद्यालय जमशेदपुर ने भारत सरकार के स्वस्थ भारत मिशन को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से जोड़ते हुए कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना संभव नहीं है।



शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों का मंथन।

डॉ. हरी अब्दुल समद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली ने कहा कि पशुधन के विकास के लिए स्वच्छ वातावरण और संतुलित आहार आवश्यक है। उन्होंने जैविक पद्धतियों के उपयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया। कार्यक्रम की संरक्षक और महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. पुष्पा सामवेदी ने स्वागत भाषण में कहा कि सतत विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की भूमिका महत्वपूर्ण है। वहीं, जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष इंजी. देवकीनंदन गंधर्व ने जैविक खेती को पर्यावरण संरक्षण का प्रभावी साधन बताते हुए रासायनिक खादों के अंधाधुंध उपयोग पर रोक लगाने की जरूरत बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अर्चना चौहान, विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने की। उन्होंने कहा कि स्वस्थ पर्यावरण ही मानव जीवन की आधारशिला है और हर व्यक्ति को इसके संरक्षण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. गौरी सनागो, प्राध्यापक, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय ने कहा कि, ऐसे आयोजन युवा पीढ़ी को शोध और नवाचार की दिशा में प्रेरित करते हैं। वेबिनार में डॉ. कृष्णकांत गंगेले बाह्य सलाहकार, डॉ. मुकेश कुमार पटेल समन्वयक एवं अंकुश जैन संयोजक रहे। देशभर से जुड़े 10 से अधिक शोधार्थियों ने पर्यावरण प्रदूषण, जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, वन्यजीव संरक्षण, सतत कृषि और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसे विषयों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

आयोजन शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में आयोजित वेबिनार में वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों ने किया मंथन

स्वस्थ पर्यावरण ही स्वस्थ मानव जीवन की आधारशिला

नईदुनिया न्यूज, बकस्वाहा : शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में "एक स्वस्थ दृष्टिकोण : पर्यावरण, पशुओं एवं मानव में अंतर्संबंध" विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इसमें देशभर के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने पर्यावरण, पशु और मानव के आपसी संबंधों पर विचार साझा किए। मुख्य वक्ता के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डा. सिंपू बबेले, प्रबंधक जैव प्रक्रिया, हिंदुस्तान पेट्रोलियम निगम लिमिटेड, बेंगलुरु ने बताया कि काई और धान के पुआल से तीसरी और



राष्ट्रीय वेबिनार में शामिल प्रतिभागी● नईदुनिया

चौथी पीढ़ी का एथेनॉल तैयार किया जा सकता है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलेगी। डा. अंजली श्रीवास्तव, सह-प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र विभाग, महिला विश्वविद्यालय जमशेदपुर ने भारत सरकार के स्वस्थ भारत मिशन और पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य के संबंधों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि जब तक पर्यावरण स्वच्छ नहीं होगा, तब तक समाज का स्वास्थ्य भी बेहतर नहीं हो सकता। कार्यक्रम में शामिल हुए डा. हरी अब्दुल समद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली ने कहा कि सामान्य पशुओं में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए स्वच्छ वातावरण और संतुलित आहार आवश्यक है। उन्होंने पशुधन विकास में जैविक पद्धतियों को बढ़ावा देने पर बल दिया।

स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध का योगदान महत्वपूर्ण: इस दौरान महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. पुष्पा सामवेदी ने कार्यक्रम की संरक्षक के रूप में सभी वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सतत विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष इंजी. देवकीनंदन गंधर्व ने कहा कि जैविक खेती से न केवल भूमि की उर्वरता बनी रहती है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण का भी प्रभावी माध्यम है।

दबंग मीडिया

www.dabangmedia.com | छतरपुर गुरूवार 06 नवम्बर 2025 | DIGITAL EDITION

आप भी बन सकते हैं पत्रकार

भारत सरकार के समाचारपत्रों के रजिस्ट्रार कार्यालय से पंजीकृत दबंग मीडिया को मध्य प्रदेश के समस्त जिलों में संवाददाता नियुक्त करना है। अगर आप अनुभवी पत्रकार हैं, फ्रेशर हैं, या पत्रकारिता सीखना चाहते हैं, तो यह आपके लिए शानदार अवसर है।पत्रकारिता में रूचि रखने वाले समाचार व विज्ञापन संकलन करने योग्य शिक्षित, सक्षम व्यक्ति संपर्क करें।

(न्यूनतम योग्यता- स्नातक पास, संपर्क करें।)

संपर्क करें- एड. भूपेन्द्र सिंह

(संपादक, अधिमान्य पत्रकार - मध्य प्रदेश शासन)

9713858529

शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों का मंथन

पर्यावरण की समृद्धि और स्वस्थ होने से ही हमारा जीवन भी समृद्ध और सुखी होता है।

शोभित शाह

बकस्वाहा (छतरपुर)। शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में 4 नवम्बर को 卐एक स्वस्थ दृष्टिकोण = पर्यावरण, पशुओं एवं मानव में अंतर्संबंध卐 विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का सफल आयोजन किया गया। इसमें देशभर के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने पर्यावरण, पशु और मानव के आपसी संबंधों पर विचार साझा किए। मुख्य वक्ता के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डॉ. पियूष बबेले, प्रबंधक जैव प्रक्रिया, हिंदुस्तान पेट्रोलियम निगम लिमिटेड, बेंगलुरु ने बताया कि काई और धान के पुआल से तीसरी और चौथी पीढ़ी का एथेनॉल तैयार किया जा सकता है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलेगी। डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सह-प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र विभाग, महिला विश्वविद्यालय जमशेदपुर ने भारत सरकार के स्वस्थ भारत मिशन और पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य के संबंधों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि जब तक पर्यावरण स्वच्छ नहीं होगा, तब तक समाज का स्वास्थ्य भी बेहतर नहीं हो सकता। डॉ. हरी अब्दुल समद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली ने कहा कि सामान्य पशुओं में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए स्वच्छ वातावरण और संतुलित आहार आवश्यक है। उन्होंने पशुधन विकास में जैविक पद्धतियों को बढ़ावा देने पर बल दिया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. पुष्पा सामवेदी ने कार्यक्रम की संरक्षक के रूप में सभी वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सतत विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष इंजी. देवकीनंदन गंधर्व ने कहा कि जैविक खेती से न केवल भूमि की उर्वरता बनी रहती है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण का भी प्रभावी माध्यम है। उन्होंने रासायनिक खादों के अंधाधुंध उपयोग को रोकने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अर्चना चौहान, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने की। उन्होंने कहा कि स्वस्थ पर्यावरण के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना असंभव है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. गौरी सनागो, प्राध्यापक, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने शोधार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन युवा पीढ़ी को शोध और नवाचार की दिशा में प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम में बाह्य सलाहकार के रूप में डॉ. कृष्णकांत गंगेले, विभागाध्यक्ष, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने मार्गदर्शन दिया। आंतरिक सलाहकार एवं वेबिनार समन्वयक की भूमिका डॉ. मुकेश कुमार पटेल, सहायक प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र ने निभाई। कार्यक्रम का संयोजन श्री अंकुश जैन, पुस्तकालयाध्यक्ष ने किया।



शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों का मंथन

कहा, स्वस्थ पर्यावरण ही स्वस्थ मानव जीवन की आधारशिला

बकस्वाहा, हमपांच। शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में 3 नवम्बर को एक स्वस्थ दृष्टिकोण = पर्यावरण, पशुओं एवं मानव में अंतर्संबंध विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का सफल आयोजन किया गया। इसमें देशभर के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने पर्यावरण, पशु और मानव के आपसी संबंधों पर विचार साझा किए। मुख्य वक्ता के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डॉ. पियूष बबेले, प्रबंधक जैव प्रक्रिया, हिंदुस्तान पेट्रोलियम निगम लिमिटेड, बेंगलुरु ने बताया कि काई और धान के पुआल से तीसरी और चौथी पीढ़ी का एथेनॉल तैयार किया जा सकता है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलेगी। डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सह-प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र विभाग, महिला विश्वविद्यालय जमशेदपुर ने भारत सरकार के स्वस्थ भारत मिशन और पर्यावरण व मानव



स्वास्थ्य के संबंधों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि जब तक पर्यावरण स्वच्छ नहीं होगा, तब तक समाज का स्वास्थ्य भी बेहतर नहीं हो सकता। डॉ. हरी अब्दुल समद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली ने कहा कि सामान्य पशुओं में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए स्वच्छ वातावरण और संतुलित आहार आवश्यक है। उन्होंने पशुधन विकास में जैविक पद्धतियों को बढ़ावा देने पर बल दिया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. पुष्पा सामवेदी ने कार्यक्रम की संरक्षक के रूप में सभी वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सतत विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष इंजी. देवकीनंदन गंधर्व ने कहा कि जैविक खेती से न केवल भूमि की उर्वरता बनी रहती है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण का भी प्रभावी माध्यम है। उन्होंने रासायनिक खादों के अंधाधुंध उपयोग को रोकने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अर्चना चौहान, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने की। उन्होंने कहा कि स्वस्थ पर्यावरण के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना असंभव है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. गौरी सनागो, प्राध्यापक, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने शोधार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन युवा पीढ़ी को शोध और नवाचार की दिशा में प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम में बाह्य सलाहकार के रूप में डॉ. कृष्णकांत गंगेले, विभागाध्यक्ष, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने मार्गदर्शन दिया। आंतरिक सलाहकार एवं वेबिनार समन्वयक की भूमिका डॉ. मुकेश कुमार पटेल, सहायक प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र ने निभाई। कार्यक्रम का संयोजन श्री अंकुश जैन, पुस्तकालयाध्यक्ष ने किया। कार्यक्रम में देशभर से जुड़े 10 से अधिक शोधार्थियों ने पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, वन्यजीव संरक्षण, सतत कृषि, सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जैसे विषयों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

दैनिक भास्कर

2025-11-06

छतरपुर भास्कर (3)

सतत विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण जरूरी : डॉ. पुष्पा

स्वस्थ दृष्टिकोण पर्यावरण, पशुओं एवं मानव में अंतर्संबंध विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

भास्कर संवाददाता | बकस्वाहा

शासकीय महाविद्यालय में एक स्वस्थ दृष्टिकोण पर्यावरण, पशुओं एवं मानव में अंतर्संबंध विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में देशभर के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने भाग लेकर पर्यावरण, पशु और मानव जीवन के आपसी संबंधों पर विचार साझा किए।

मुख्य वक्ता अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डॉ. पियूष बबेले, प्रबंधक (जैव प्रक्रिया), हिंदुस्तान पेट्रोलियम निगम लिमिटेड बेंगलुरु ने बताया कि काई और धान के पुआल से तीसरी व चौथी पीढ़ी का एथेनॉल तैयार किया जा सकता है। इससे किसानों की आय बढ़ाने के साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा। डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सह-प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र विभाग, महिला विश्वविद्यालय जमशेदपुर ने भारत सरकार के स्वस्थ भारत मिशन को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से जोड़ते हुए कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना संभव नहीं है।



शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों का मंथन।

डॉ. हरी अब्दुल समद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली ने कहा कि पशुधन के विकास के लिए स्वच्छ वातावरण और संतुलित आहार आवश्यक है। उन्होंने जैविक पद्धतियों के उपयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया। कार्यक्रम की संरक्षक और महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. पुष्पा सामवेदी ने स्वागत भाषण में कहा कि सतत विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की भूमिका महत्वपूर्ण है। वहीं, जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष इंजी. देवकीनंदन गंधर्व ने जैविक खेती को पर्यावरण संरक्षण का प्रभावी साधन बताते हुए रासायनिक खादों के अंधाधुंध उपयोग पर रोक लगाने की जरूरत बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अर्चना चौहान, विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने की। उन्होंने कहा कि स्वस्थ पर्यावरण ही मानव जीवन की आधारशिला है और हर व्यक्ति को इसके संरक्षण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. गौरी सनागो, प्राध्यापक, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय ने कहा कि, ऐसे आयोजन युवा पीढ़ी को शोध और नवाचार की दिशा में प्रेरित करते हैं। वेबिनार में डॉ. कृष्णकांत गंगेले बाह्य सलाहकार, डॉ. मुकेश कुमार पटेल समन्वयक एवं अंकुश जैन संयोजक रहे। देशभर से जुड़े 10 से अधिक शोधार्थियों ने पर्यावरण प्रदूषण, जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, वन्यजीव संरक्षण, सतत कृषि और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसे विषयों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

सच्ची बात, बेधड़क
दैनिक भास्कर

दैनिक दबंग बुन्देलखण्ड
सच का साहस.....

शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों का मंथन – कहा, स्वस्थ पर्यावरण ही स्वस्थ मानव जीवन की आधारशिला

दबंग बुन्देलखण्ड

बकस्वाहा । शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा में 3 नवम्बर को ह्लएक स्वस्थ दृष्टिकोण : पर्यावरण, पशुओं एवं मानव में अंतसंबंधह्व विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का सफल आयोजन किया गया। इसमें देशभर के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने पर्यावरण, पशु और मानव के आपसी संबंधों पर विचार साझा किए।

मुख्य वक्ता के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डॉ. पियूष बबेले, प्रबंधक जैव प्रक्रिया, हिंदुस्तान पेट्रोलियम निगम लिमिटेड, बेंगलुरु ने बताया कि काई और धान के पुआल से तीसरी और चौथी पीढ़ी का एथेनॉल तैयार किया जा सकता है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलेगी। डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सह-प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र विभाग, महिला विश्वविद्यालय जमशेदपुर ने भारत सरकार के स्वस्थ भारत मिशन और



पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य के संबंधों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि जब तक पर्यावरण स्वच्छ नहीं होगा, तब तक समाज का स्वास्थ्य भी बेहतर नहीं हो सकता। डॉ. हरी अब्दुल समद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली ने कहा कि सामान्य पशुओं में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए स्वच्छ वातावरण और संतुलित आहार आवश्यक है। उन्होंने पशुधन विकास में जैविक पद्धतियों को बढ़ावा देने पर बल दिया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. पुष्पा सामवेदी ने कार्यक्रम की संरक्षक के रूप में सभी वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सतत विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण में शोध का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष इंजी. देवकीनंदन गंधर्व ने कहा कि जैविक खेती से न केवल भूमि की उर्वरता बनी रहती है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण का भी प्रभावी माध्यम है। उन्होंने रासायनिक खादों के अंधाधुंध उपयोग को रोकने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अर्चना चौहान, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने की। उन्होंने कहा कि स्वस्थ पर्यावरण के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना असंभव है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. गौरी सनागो, प्राध्यापक, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने शोधार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन युवा पीढ़ी को शोध और नवाचार की दिशा में प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम में बाह्य सलाहकार के रूप में डॉ. कृष्णकांत गंगेले, विभागाध्यक्ष, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर ने मार्गदर्शन दिया। आंतरिक सलाहकार एवं वेबिनार समन्वयक की भूमिका डॉ. मुकेश कुमार पटेल, सहायक प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र ने निभाई। कार्यक्रम का संयोजन श्री अंकुश जैन, पुस्तकालयाध्यक्ष ने किया। कार्यक्रम में देशभर से जुड़े 10 से अधिक शोधार्थियों ने पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, वन्यजीव संरक्षण, सतत कृषि, सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जैसे विषयों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।